आठवें इमाम - इमाम मूसिए रज़ा (अलै.)

मसमूम हुए लख़्ते दिले साकिऐ कौसर वाहसरतो दरदा
मूसिए रज़ा मोमिनों के आठवें रहबर वाहसरतो दरदा

मामून ने पहले तो मदीने से बुलाया नाना से छुड़ाया
फिर ज़हर दिया अपना वली अहद बनाकर वाहसरतो दरदा

लिखा है के एक रोज़ करीब अपने बुलाकर इज्ज़त से बिठाकर
अंगूर बा इसरार दिए ज़हर मिला कर वाहसरतो दरदा

गो इल्म था पर मरज़िए हक़ से रहे मजबूर और खा लिए अंगूर
खाते ही जिसे शाह की हालत हुई अबतर वाहसरतो दरदा

फैला असर उड़ने लगा रंगे रुख़े पुरनूर और रख दिए अंगूर
फिर आबे अनार आह दिया ज़हर मिलाकर वाहसरतो दरदा

उठकर चले फौरन ही तो मामून ने पूछा है क़स्द कहाँ का
फरमाया वहाँ जाता हूँ भेजा है जहाँ पर वाहसरतो दरदा

यह कहते ही वापस हुए बैतुल शरफ़ आक़ा अफसोस की है जा
दुनिया से उसी शब को सिधारे सूए कौसर वाहसरतो दरदा

तेईसवीं ज़ीक़ाद जुमेरात के दिन आह महशर हुआ बरपा
सन् दो सौ दो सद् हिजरी में मातम हुआ घर घर वाहसरतो दरदा

गो डेढ़ बरस बसरे में ऐ 'फिक्र' रहे हम लेकिन यह रहा ग़म
मशहद की ज़ियारत न हुई फिर भी मयस्सर वाहसरतो दरदा